मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

# दुलारी का भाग्य

विकास त्रिपाठी

राम नगरी अयोध्या में रहने वाले सेठ धर्मदास के यहाँ पांच बेटियां थी, जिनमे दुलारी सबसे छोटी थी। सेठ जी ने अपनी पांचों बेटियों का लालन-पालन बड़े प्यार दुलार के साथ किया था। सेठ जी एक जाने माने व्यापारी होने के साथ-साथ धार्मिक कार्यो में भी अत्याधिक रूचि लेने वाले व्यक्ति थे। वे नियमित रूप से सत्संगो में जाया करते थे। सेठ जी एक दिन दोपहर के भोजन बाद विश्राम कर रहे थे, तभी अचानक उनके दिमाग में कल शाम की सुनी हुई कथा की बात –"हर व्यक्ति अपने भाग्य और कर्मो का फल प्राप्त करता है और उसके जीवन को सुखी या दुखी बनाने में कोई दूसरा चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता है", याद आने लगी। परन्तु सेठ जी यह मानने को तैयार नहीं थे क्योंकि उनका मानना था की कोई भी किसी का करम अथवा भाग्य बदल सकता है। इसको आजमाने के लिए उन्होनें अपनी पांचो बेटियों को अपने पास बुलाया और बोले- 'बेटी आज तक आप सबके लिए मैं सब कुछ करता आया हूं, और मेरे मरने के बाद सब कुछ तुम सब का ही होगा'। बेटियों ने एक स्वर में कहा कि पिताजी आप बहकी बहकी बातें क्यों कर रहे हो, आपकी तबीयत ठीक तो है? सेठ जी थोड़ा सोचते हुए बोले तबीयत तो सही है पर मेरे मन में एक सवाल उठ रहा है जो मुझे उलझन में डाले हुए है। इस पर, बड़ी बेटी बोली क्या सवाल है पिताजी जो आपको इतना उलझन में डाले हुए है? तब सेठ जी ने सोचते हुए पूछा –**'बेटी तुम सब किसके कर्म और भाग्य से इतने सुकून की जिंदगी जी रही हो?**' दुलारी के अलावा, चारों बेटियों ने कहा-**'पिताजी आपके कर्म और भाग्य से हम सब इतने सुकून की जिंदगी जी रही है'**। ये सुनकर सेठ जी खुश हुए।

किंतु जब उनका ध्यान छोटी बेटी दुलारी पर गया तो उन्होनें देखा कि वो चुपचाप खड़ी थी। दुलारी, जिसको सभी बहुत प्यार करते थे। वह स्वभाव से बहुत सीधी, सरल और बुद्धिमान किंतु मन से चंचल थी। सेठ जी सुबह उठकर दुलारी का चेहरा सबसे पहले देखते थे क्योंकि दुलारी उनके लिए शुभ पूरक थी। दुलारी का शांत रहना सेठ धर्मदास को अच्छा नहीं लगा, वे बोले- 'दुलारी क्या बात है? बेटी तुमने कुछ नहीं कहा'। काफी देर सोचने के बाद दुलारी बोली- **'पिताजी मैं इन सब के उत्तर से सहमत नहीं हूं। क्योंकि, मेरा मानना है कि हर व्यक्ति अपने कर्म और भाग्य से जीता है। वह किसी पर जिंदगी भर निर्भर नहीं रह सकता है'**। सेठ जी यह सुनकर आश्चर्य चकित हुए और मन में सोचने लगे कि इसके लिए हम सब कुछ कर रहे हैं परन्तु ये कुछ समझती ही नहीं हैं। मन ही मन क्रोधित होते हुए उन्होंने फैसला किया कि इस बात को आजमाया जाए कि दुलारी कहां तक अपनी बात पर टिकी रहती है। कुछ समय उपरांत उन्होंने अपनी चारों बेटियों की शादी बड़ी

धूमधाम से की और उन्हें बहुत सारा दान दहेज देकर विदा किया। किंतु जब दुलारी की बारी आयी तो सेठ जी ने दुलारी के कर्म और भाग्य का परीक्षा लेने हेतु पंडित जी से कहा कि जो सबसे गरीब व्यक्ति हो उससे दुलारी की शादी कर दिया जाये। पंडित जी ने कहा जैसी आप की मर्जी। पंडित जी वैसा ही रिश्ता दूर के एक गांव में झोपड़ी में रहने वाले प्रेम से तय कर आये। प्रेम अपने पिता हरी के साथ रहता था। पिता-पुत्र दोनों मजदूरी करके अपना भरण पोषण करते थे। उन्हें, पंडित जी द्वारा दिया गया विवाह प्रस्ताव ना स्वीकारते हुए भी स्वीकार करना पड़ा। सेठ जी ने दुलारी की शादी गरीब प्रेम से करा दिया और एक जोड़ी कपड़ा एवं कोछा का चावल देकर बिदा कर दिया। शाम को दुलारी द्वारा लाया गया कोछा का चावल, जो दुलारी की मां ने रोते हुए बेटी के आंचल में बांध दिया था, के अतिरिक्त खाने को कुछ भी न था। दुलारी ने उसी चावल को बनाकर रख दिया, परन्तु किसी ने रात में खाना नहीं खाया। प्रेम उदास था, वो दुखी मन से दुलारी के पास गया और कहा मुझे माफ कर देना। मैं मजबूर था शादी करने को, पंडित जी को मना किया तो खरी-खोटी सुनाने लगे और मेरा एक भी ना माने। दुलारी ने रोते हुए कहा, आपकी कोई गलती नहीं है, **मेरे भाग्य में जो लिखा है वही मिला मुझे।** आज से आप मेरे स्वामी हैं। आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य और धर्म है। दुलारी ने पूर्ण रूप से प्रेम को स्वीकार कर लिया था। प्रेम स्वभाव से भी दुलारी को बहुत अच्छा लगा। दुलारी ने प्रेम से कहा हम ऐसे कब तक रहेंगे। इस पर, प्रेम बोला क्या करूं मेरे पास झोपड़ी के अलावा कुछ नहीं है। तब दुलारी ने पूछा यह जो जमीन झोपड़ी के पास खाली पड़ी है वो किसकी है। प्रेम बोला अपना ही है। खुश होते हुए, दुलारी ने कहा ठीक है। सुबह उठकर आप थोड़ा मिट्टी खोदकर पानी डाल देना। प्रेम ने पूछा क्या करोगी। दुलारी बोली कल देख लेना आप। प्रेम ने हाँ में हाँ मिलाया और सुबह उठकर वैसा ही किया। उसने मिट्टी खोदकर पानी डाल दिया और पिता हरि के साथ मजदूरी के लिए निकल गया।

दुलारी सुबह उठकर उस मिट्टी को अच्छे से शान कर उसके लगभग तीन चार सौं दिये तैयार कर दिए। शाम को हरी और प्रेम जब मजदूरी से वापस आए तो कि देखा दुलारी उन दिये को आग में पकाकर उनको टोकरी में रख रही थी। हरी ने पूछा इनका क्या करोगी तो दुलारी ने कहा इनको पास के बाजार में बेच दो और जो पैसे मिलेंगे उससे जरूरत का सामान आ जाएगा। प्रेम ने दिये को बाजार में एक कुम्हार के दुकान पर बेच दिया। जिससे उनको दो सौं रुपए मिले। इन रुपयों को पाकर प्रेम बहुत खुश हुआ और जरूरत का सामान लेकर घर वापस आ गया। धीरे-धीरे हरि और प्रेम भी इस काम में दुलारी का साथ देने लगे। अब दुलारी ने दिये के साथ-साथ बच्चों का खिलौना एवं मिट्टी की मूर्ति आदि भी बनाने लगी। समय के साथ उनकी जरूरतें पूरी होने लगी तथा कुछ पैसे भी बचने लगे। इस काम से, कुछ महीनों बाद जमीन पर, तलाब की भांति बहुत बड़ा गड्ढा हो गया। जिसपे प्रेम ने चिंता व्यक्त करते हुए दुलारी से कहा अब क्या करेंगे? दुलारी ने कहा आप चिंता मत करो मैंने सोच रखा है इसका क्या करना है। परन्तु, बरसात के पहले हमें एक कमरा बनाना होगा। हरी और प्रेम ने मिलकर इकट्ठे किए गए पैसे से एक कमरा तैयार करवा दिया। बरसात शुरू हुआ और पूरा गड्ढा पानी से भर गया, तब दुलारी ने कहा इसके चारों तरफ बंधा बना दो। हरी और प्रेम ने बंधा बनकर तैयार किया तो दुलारी ने कहा कुछ मछलियों को लाकर इसमें डाल दो। मछली पर्याप्त मात्रा मे डाल दी गई। दुलारी इन मछलियों का देखभाल खुद करती थी। दुलारी उनको पर्याप्त मात्रा में भोजन

उपलब्ध कराती थी एवं अपने हाथों से आटे की गोलियां बना बना कर मछलियों को खिलाती और पानी कम ना होने पाए इसका उचित प्रबंध करती। कुछ महीना बाद गड्ढे में मछलियां बहुत ज्यादा हो गई। दुलारी ने कहा अब इनको बेचना शुरू कर दो। प्रेम ने ऐसा ही किया। उन्हें मछलियों का उचित दाम मिल जाता था। धीरे-धीरे समय व्यतीत होने लगा दुलारी की सोच से एक बड़ा घर बनकर तैयार हो गया। घर पर एक दो भैंसे भी आ गई, जिसका दूध भी बाजार में बिकने लगा। उसी तरह दुलारी ने एक के बाद एक उपाय सोचती गई और अपने परिवार की मदद से अपने घर को उन्नति के शिखर पे ले गयी। अब दुलारी को एक बेटा भी हो गया है जिसका नाम उसने अपने पिता के नाम पर ही धर्मदास रखा है। हरी भी अब बुजुर्ग हो गया था तथा दुलारी ने उसे काम बूत ना करने को कह रखा है। हरी अब दिन भर भजन करता और अपने पोते के साथ खेलता था। हरी और प्रेम दोनों खुश थे क्योकि उन्हें भाग्य बदलने वाली दुलारी जो मिल गयी थी। हरी, प्रेम, और दुलारी अपने बच्चे साथ सुखी पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इधर सेठ धर्मदास जी ने बहुत दिनों के बाद अपनी छोटी बेटी का सुध लेने का मन बनाया। उन्होंने दबे मन से पंडित जी को बुलाया और उनको साथ लेकर अपनी बेटी के घर की ओर चल दिए। घर के पास पहुंचकर पंडित जी ने जब वहां पर झोपड़ी की जगह एक आलीशान मकान देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ और उन्होंने सेठ जी से कहा यहां तो कुछ भी नहीं था। अब यह सब कुछ कहां से आ गया? कुछ देर तक वहीं पे खड़े होकर सेठ जी मन ही मन बेटी की चिंता में डूब गए की ना जाने कहा गयी हो मेरी बेटी, ये मुझसे कितनी बड़ी भूल हो गयी। वो सोच ही रहे थे कि उनके पास आकर एक नौकर ने बोला कि मालिक आपको बुला रहे है। हरी और प्रेम ने सेठ जी को बड़े आदरपूर्वक घर के अंदर ले गए और आवभगत की। उनकी खातिरदारी में उन्होंने कोई कमी नहीं छोड़ी। सेठ धर्मदास जी के आंखों में आंसू थे और चारों तरफ दुलारी को ढूंढ रहे थे। ये देखकर प्रेम ने कहा कि दुलारी अभी मंदिर गयी है, आती ही होगी। दुलारी को देखते ही सेठ जी उसके पैरों पर गिर गए और बोले बेटी हमें माफ कर देना। मैं भी किस भ्रम में आ गया था जो अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी बेटी को अकेला छोड़ दिया। बेटी आपने सत्य ही कहा था कि हर कोई अपने भाग्य और कर्म पर जीता है। दुलारी कुछ बोल ना सकी वह पिता से लिपटकर सिर्फ रोए जा रही थी। सिसकिया लेते हुए, उसने सिर्फ इतना ही कहा कि यही मेरे भाग्य में था पिताजी!!!!

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें